

मध्य प्रदेश ने चीता के लिये नया आवास बनाने की योजना

चर्चा में क्यों?

गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य के लिये [चीता कार्य योजना](#) में चीता आनुवंशिकी का विश्लेषण, [तेंदुओं](#) को स्थानांतरित करना और वर्ष 2025 में चीता के पुनः परचय की तैयारी के लिये शिकार की संख्या को बढ़ाना शामिल है।

मुख्य बटु

- चीता परचय हेतु कार्य योजना:
 - प्रारंभिक रलीज: अभयारण्य के पश्चिमी रेंज में 64 वर्ग किलोमीटर के शिकारी-रोधी बाड़े में 6-8 चीतों को लाया जाएगा।
 - शिकार आधार: इस क्षेत्र में चकारा, नीलगाय और अन्य प्रजातियों सहित पर्याप्त शिकार उपलब्ध है, अनुमानतः प्रतिवर्ष 1,560-2,080 शिकार पशुओं की आवश्यकता होती है।
 - वर्तमान में शिकार की उपलब्धता: इस क्षेत्र में वर्तमान में 475 जानवर हैं तथा [चीतल और काले हरिण](#) जैसे 1,500 अतिरिक्त शिकार भी हैं।
- तेंदुए की चुनौती और शमन:
 - तेंदुए की जनसंख्या: पश्चिमी रेंज में लगभग 70 तेंदुए हैं, जो शिकार के लिये प्रतिस्पर्धा के कारण चीतों, विशेषकर उनके शावकों के लिये खतरा उत्पन्न करते हैं।
 - तेंदुओं का स्थानांतरण: चीतों को वहाँ लाए जाने से पहले बाड़ वाले क्षेत्र के सभी तेंदुओं को पकड़ लिया जाएगा और उन्हें स्थानांतरित कर दिया जाएगा।
 - वर्तमान रणनीति: यह प्रयास चीता जनसंख्या को स्थिर करने के लिये एक दशक से अधिक समय से चल रही रणनीति का हिस्सा है, जिसमें मांसाहारी अंतःक्रियाओं पर अनुसंधान के लिये 10 तेंदुओं की [ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम \(GPS\)](#) ट्रैकिंग भी शामिल है।
- चीता जनसंख्या और आनुवंशिक रणनीति:
 - चीतों का आयात: आनुवंशिक रूप से विविध आबादी बनाने के लिये अफ्रीकी रज़िर्वों से 12-14 चीतों (8-10 नर, 4-6 मादा) की आबादी का आयात किया जाएगा।
 - आनुवंशिक विविधता: अंतःप्रजनन से बचने के लिये चीतों का चयन आनुवंशिक अनुकूलता के आधार पर किया जाएगा, जिसका विश्लेषण माइक्रो-सैटेलाइट और [जीनोमिक तकनीकों](#) का उपयोग करके किया जाएगा।
 - व्यक्तिगत नगरानी: जनसांख्यिकीय अध्ययन और उत्तरजीवित एवं स्वास्थ्य की नगरानी के लिये चीता प्रोफाइल बनाए रखा जाएगा।
- पारस्थितिकी प्रभाव और शिकार प्रजाति प्रबंधन:
 - पारस्थितिकीय प्रभाव: चीतों के आने से शिकार प्रजातियों के व्यवहार पर असर पड़ेगा, जिसके लिये काले हरिण, चीतल और नीलगाय की आवश्यकता होगी।
 - शिकार को रेडियो कॉलर लगाना: कुछ शिकार जानवरों को रेडियो कॉलर लगाया जाएगा ताकि शिकारियों की उपस्थिति के प्रति उनके अनुकूलन का अध्ययन किया जा सके।
 - जीरणोद्धार योजनाएँ: अभयारण्य के आवास का जीरणोद्धार एक व्यापक चीता संरक्षण योजना का हिस्सा है, जिसमें राजस्थान के [भैंसरोडगढ़ वन्यजीव अभयारण्य](#) और [मुकुंदरा हिल्स टाइगर रज़िर्व](#) जैसे अन्य स्थलों को भी चीता आबादी के लिये चिह्नित किया गया है।
- चीता की वर्तमान स्थिति:
 - [कुनो राष्ट्रीय उद्यान](#) में वर्तमान में 24 चीते (12 शावकों सहित) हैं, जिनमें से दो चीतों को हाल ही में खुले वन में छोड़ा गया है।

गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य

- स्थान:
 - 1974 में अधिसूचित, इसमें राजस्थान की सीमा से लगे पश्चिमी मध्य प्रदेश के [मंदसौर और नीमच](#) ज़िले शामिल हैं।
 - [चंबल नदी](#) इस अभयारण्य को लगभग दो बराबर भागों में विभाजित करती है तथा [गांधी सागर बाँध](#) भी अभयारण्य के भीतर स्थित है।
- पारस्थितिकी तंत्र:
 - इसके पारस्थितिकी तंत्र की विशेषता इसकी [चट्टानी भूमि और उथली ऊपरी मृदा](#) है, जो [सवाना पारस्थितिकी तंत्र](#) को समर्थन प्रदान करती है।

- इसमें [सूखे परणपाती वृक्षों](#) और झाड़ियों से भरे **खुले घास के मैदान** शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, अभयारण्य के भीतर नदी घाटियाँ सदाबहार हैं।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/madhya-pradesh-plans-new-home-for-cheetahs>

